इकाई 7 : विविध

पाठ :– 7.1 मध्ययुगीन काव्य (मीरा, दादू)

पाठ :– 7.2 मैं लेखक कैसे बना

पाठ :– 7.3 जेबकतरा

पाठ :– 7.4 गोधूलि

इकाई

7 विविध

विविध में इस बार भी मध्यकाल से लेकर अधुनातन रचनाकारों तक का रस समाहित है। इस इकाई में जहाँ एक ओर दरद दिवाणी मीरा हैं जिन्होंने भक्ति के मार्ग में आई सभी बाधाओं की परवाह न कर प्रियतम कृष्ण की प्राप्ति को अपना एक लक्ष्य बताया है ताकि उसके सहारे भव–सागर पार किया जा सके। वहीं दूसरी ओर ज्ञानमार्गी कवि दादू दयाल हैं जो प्रेम के अलौकिक रूप को अपनी कविता का केन्द्र बनाते हैं। दादू ने अपनी रचनाओं में पंथ के वाद–विवादों से दूर रहकर सभी को समदृष्टि से देखते हुए शाश्वत शांति एवं जन्म मरण रुपी आवागमन से छुटकारा पाने का उपाय बतलाते हुए मानव को सहज–सरल मार्ग को अपनाने का संदेश दिया है।

ज्ञान प्रकाश विवेक आधुनिक लेखक हैं, जो मानवीय संवेदना को बेहद करीब से छूकर महसूस करवाते हैं, तो इसके ठीक विपरीत एक विदेशी रचनाकार **मुनरो साकी** भी हैं जिनकी रचना हमें मनुष्य की कुछ अन्य प्रवृत्तियों से मुखातिब करती हैं। इस सबके साथ ही एक रचनाकार के बनने की यात्रा भी है जिसमें आपको तमाम अनुभव मिलेंगे।

पाठ – 7.1

मध्ययुगीन काव्य

4AUP18

पाठ – 7.1.1

मीराबाई

जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म संवत् 1573 में जोधपुर में चोकड़ी नामक गाँव में हुआ था। कम आयु में ही इनका विवाह मेवाड़ के महाराणा कुमार भोजराज के साथ हो गया था। मीरा बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। विवाह के थोड़े ही दिन के बाद मीरा बाई के पति का स्वर्गवास हो गया। पति की मृत्यु के बाद इनकी भक्ति–भावना दिन–प्रतिदिन बढ़ती गई। मीराबाई द्वारा कृष्णभक्ति में पद रचना और नाचना–गाना सामंती राज परिवार की परंपराओं के अनुकूल नहीं था। राज परिवार ने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका चली गईं और जीवन पर्यंत वहीं रहीं।

मीरा की कविता में कृष्ण भक्ति और प्रेम का चरम उत्कर्ष मिलता है। उनकी कविता में ब्रज और मेवाड़ी दोनों का पुट मिलता है। यहाँ दिए गए पदों में उन्होंने अपने कृष्ण प्रेम का वर्णन किया है। मीरा के कृष्ण प्रेम की उत्कटता इन पदों मे देखी जा सकती है। व्यक्तिगत प्रेम की इतनी उदात्त छवियाँ मध्यकालीन काव्य में दुर्लभ हैं।

पद

पग घुँघरु बाँध मीरा नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।।
विष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे।।

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघरू, लोक–लाज तजि नाची।।
गई कुमति, लई साधुकी संगति, भगत, रूप भै साँची।
गाइ गाइ हरिके गुण निस दिन, कालब्याल सूँ बाँची।।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीरा श्रीगिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची।।

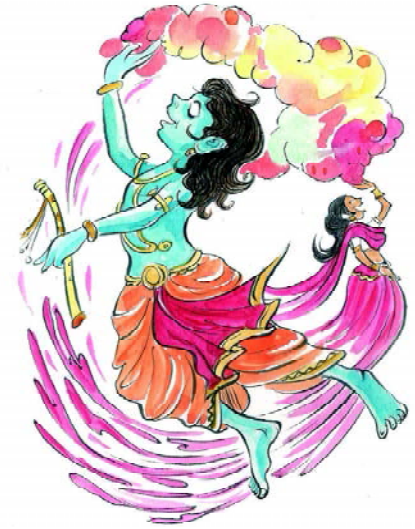

बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरति सांवरि सूरति, नैणा बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती–माल।।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।।
खायो न खरच चोर न लेवे, दिन–दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरस हरस जस गायो।।

शब्दार्थ :–

बावरी – पगली; **न्यात** – नाते रिश्ते वाले; **कुलनासी** – कुल का नाश करने वाला; **नागर** – नगर में रहने वाला; **अविनासी** – जिसका विनाश न हो; **कुमति** – बुरी मति; **कालब्याल** – काल रूपी साँप; **काँची** – कच्चा; **उर** – हृदय; **बछल** – वत्सल; **म्हे** – मैं; **अमोलक** – अमूल्य; **खेवटिया** – नाव खेने वाला; **भवसागर** – संसार रूपी समुद्र; **हरस** – खुश, प्रसन्न।

यह भी पढ़िए

मीरा ने एक पद होली के बारे मे भी लिखा है उसे देखिए–

होरी खेलत हैं गिरधारी

मुरली चंग बजत डफ न्यारो
संग युवती ब्रज नारी
होरी खेलत हैं गिरधारी
चन्दन केसर छिरकत मोहन
अपने हाथ बिहारी
भरि–भरि मूठ लाल चहुँ ओर
देत सबन पे डारि
होरी खेलत हैं गिरधारी

नीचे दी गई नज़ीर अकबराबादी की कविता मीरा के लगभग 300 साल बाद लिखी गई थी। उन्होंने होली पर अनेक कविताएँ लिखीं हैं। नज़ीर उर्दू के कवि थे और उनकी कविताओं में हिन्दू मुस्लिम सौमनस्य काफी देखने को मिलता है...

होली

जब खेली होली नंद ललन हँस हँस नंदगाँव बसैयन में।
नर नारी को आनंद हुए खुशवक्ती छोरी छैयन में।।
कुछ भीड़ हुई उन गलियों में कुछ लोग ठठ्ठ अटैयन में ।
खुशहाली झमकी चार तरफ कुछ घर–घर कुछ चौपय्यन में।।
डफ बाजे राग और रंग हुए, होली खेलन की झमकैयन में।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े, हुई धूम कदम की छैयन में।।

———————————

दादू दयाल

जीवन परिचय

दादू दयाल का जन्म अनुमानतः संवत् 1601 में अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ था। इनके जीवन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती। कहा जाता है वे गृहस्थी त्यागकर 12 वर्षों तक कठिन तप करते रहे। उसके बाद वे नरेना (जयपुर) आ बसे। दादू दयाल जी के अनुभव वाणी (दादूवाणी) से प्रेरित होकर उनके अनुयायियों ने एक पंथ की स्थापना की, जिसे दादू पंथ के नाम से जाना गया। दादू दयाल की कविता अपने विचारों में कबीर की कविता के निकट प्रतीत होती है। दादूवाणी व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देती है। उनके शिष्यों में रज्जब, सुंदरदास, और गरीबदास भी प्रसिद्ध कवि हैं। दादू दयाल की कविता में कबीर की ही तरह सबद, साखी और पद मिलते हैं। यहाँ उनके दो पद और कुछ दोहे दिए जा रहे हैं।

अजहूँ न निकसे प्रान कठोर
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुंदर प्रीतम मोर
चारि पहर चारो जुग बीते रैनि गँवाई भोर
अवधि गई अजहूँ नहिं आए, कतहुँ रहे चितचोर
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर
दादू ऐसे आतुर बिरहिनि जैसे चंद चकोर।

भाई रे! ऐसा पंथ हमारा
द्वै पख रहितपंथ गह पूरा अबरन एक अधारा
बाद बिबाद काहू सौं नाहीं मैं हूँ जग से न्यारा
समदृष्टि सूँ भाई सहज में आपहिं आप बिचारा
मैं, तैं, मेरी यह गति नाहीं निरबैरी निरविकारा
काम कल्पना कदै न कीजै पूरन ब्रह्म पियारा
एहि पथि पहुँचि पार गहि दादू, सों तत् सहज संभारा

सन्तप्रवर श्री दादू दयालजी महाराज

हिंदू तुरक न जाणों दोइ।
साँईं सबका सोई है रे, और न दूजा देखौं कोई।।

कीट–पतंग सबै जोनिन, जल–थल संगि समाना सोई।
पीर पैगाम्बर देव–दानव, मीर–मलिक मुनि–जनकौं मोहि।।1।।
करता है रे सोई चीन्हौं, जिन वै रोध करै रे कोई।
जैसें आरसी मंजन कीजै, राम–रहीम देही तन धोई।।2।।
साँईंकेरी सेवा कीजै पायौ धन काहे कौं खोई।
दादू रे जन हरि भज लीजै, जनम–जनम जे सुरजन होई।।3।।

दादू घटि कस्तुरी मृग के, भरमत फिरे उदास।
अंतर गति जाणे नही, ताथै सूंघे घाँस।।4।।

दादू सब घट में गोविन्द है, संग रहै हरि पास ।
कस्तुरी मृग में बसै, सूंघत डोले घाँस।।5।।

शब्दार्थ :–

निरखि – ध्यान से देखना; **चितवत** – देखना; **बिरहिन** – विरह (वियोग) में व्याकुल; **मसीत** – मस्जिद; **जनि** – नहीं; **समदृष्टि** – समान भाव से देखना, तटस्थ दृष्टि; **निरबैरी** – बैरी विहीन; **निरविकरा** – निर्विकार; **कदै –** कहै; **गहि** – पकड़ना; **तुरक–**तुर्क; **चीन्हौं** – पहचानना; **आरसी** – दर्पण; **साँईंकेरी** –ईश्वर कृपा, साँईंकृपा, **भरमत** – भ्रम, **जाणे** – जानना।

यह भी पढ़िए

आपै मारे आपको, आप आपको खाइ ।। 1।।
आपै अपना काल हे, दादू कह समझाई
आपा मेटे हरि भजै, तन मन तजे विकार ।। 2।।
निर्वैरी सब जीव सौं, दादू यहू मत सार।।
आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार।। 3।।
दादू मूल विचारिए, दूजा कौन गंवार।।

निगुर्ण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा के मूर्धन्य कवि कबीर की निम्नांकित पंक्तियाँ पढ़िए। दादू दयाल व कबीर की पंक्तियों में काफी समानता देखने को मिलता है। :–

कस्तुरी कुण्डलि बसै मृग ढूढैं वन माहि
ऐसे घट–घट राम है दुनिया देखे नाहिं।

अभ्यास

पाठ से

1. अपने पदों में मीरा खुद को दासी कहती हैं। ऐसा कहने के पीछे क्या आशय है? लिखिए।
2. 'गई कुमति, लई साधु की संगति' से कवि का क्या आशय है? लिखिए।
3. मीरा को जो अमोलक वस्तु मिली है उसके बारे में वे क्या–क्या बता रही हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. राम रतन धन को जनम–जनम की पूँजी कहने का आशय क्या है? लिखिए।
5. राणा ने मीरा बाई को विष का प्याला क्यों भेजा होगा और मीरा बाई उस विष को पीते हुए क्यों हँसी? अपने विचार लिखिए।
6. "भाई रे! ऐसा पंथ हमारा" कविता में दादू के पंथ के बारे में पद में क्या–क्या बताया गया है?
7. उपासना के सगुण और निर्गुण दोनों पक्षों को आपने कविताओं में पढ़ा है। आपके अनुसार दोनों में से कौन–सा पक्ष अधिक सरल है? अपनी बातें तर्क सहित लिखिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

   "करता है रे सोई चीन्हौं, जिन वै रोध करै रे कोइ।

   जैसैं आरसी मंजन कीजै, राम–रहीम देही तन धोइ।

पाठ से आगे

1. क्या आपको कोई ऐसी वस्तु मिली है जिससे बेहद खुशी महसूस हुई हो। उसके बारे में बताइए।
2. कभी–कभी लोग अपने जीवन मूल्यों, आदर्शों और त्याग के कारण ज्यादा अमूल्य वस्तुओं को छोडकर साधारण वस्तुओं का चयन करते हैं। आपके अनुभव में भी ऐसी घटनाएँ होंगी जब आपने ऐसा कुछ होते देखा–पढ़ा अथवा सुना हो। एक या दो उदाहरण लिखिए।
3. क्या आज भी हमारे समाज में महिलाओं के साथ भेद–भाव होता है? तर्क देकर अपनी बात को पुष्ट कीजिए।
4. आज भी हमारे देश में जाति और संप्रदाय के नाम पर झगड़े होते हैं। आपके अनुसार इसके क्या कारण हैं? इन कारणों का समाधान किस तरह से किया जा सकता है? विचार कर लिखिए।
5. मध्यकाल के कवियों के बारे में कहा जाता है कि वे अशिक्षित या अल्पशिक्षित थे फिर भी उन्होंने अच्छे ग्रंथों और काव्यों की रचना की। वे ऐसा कैसे कर पाए होंगे? अपने साथियों और शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

4B4K2V

6. वर्तमान समय में समाज का झुकाव भौतिक सौंदर्य के प्रति बढ़ता जा रहा है। इन परिस्थितियों में अध्यात्म के जरिए आन्तरिक सौंदर्य की ओर उन्मुख होना (लौटना) आपकी समझ में कितना महत्व रखता है? शिक्षक से चर्चा कीजिए और लिखिए।

भाषा के बारे में

1. पाठ में दी गई कविताओं में ऐसे शब्द आए हैं जिनका चलन आजकल नहीं है। उन्हें पहचान कर लिखिए।
2. पाठ में प्रयोग हुई भाषा आपके घर की भाषा से किस प्रकार भिन्न है? इससे मिलते–जुलते शब्द आपकी भाषा में भी होंगे। उन्हें छाँट कर लिखिए।
3. अपने शिक्षक और सहायक पुस्तक की मदद लेकर इस बात पर चर्चा करें की गद्य और पद्य की भाषा में किस प्रकार का अंतर होता है?
4. कविता में लय और गेयता लाने के लिए भाषा की स्वर ध्वनियों को लघु (। = ह्रस्व) और गुरु (ऽ = दीर्घ) के अनुसार उपयोग किया जाता है। स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है। इन स्वरों को ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत इन तीन वर्गों में बाँटा गया है।

   ह्रस्व स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उसे ह्रस्व स्वर (वर्ण) कहते हैं। यथा – अ, इ, उ, ऋ, और अनुनासिक।

   दीर्घ स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है उसे दीर्घ स्वर (वर्ण) कहते हैं। यथा – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (अनुस्वार एवं संयुक्ताक्षर के पहले का वर्ण)

   प्लुत स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में दो से अधिक मात्रा का समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। **वैदिक मंत्रों एवं संगीत में इन स्वरों का उपयोग किया जाता है।**

   नीचे दो पंक्तियों में इन मात्राओं को गिनने का प्रयास किया गया है–

   ।। ऽ। ।।।। ऽ।ऽ ।। ऽ। ऽऽ ऽ ।ऽ = 16,12 = 28 मात्राएँ
   बन बाग उपबन बाटिका सर, कूप बापी सो हहीं।

   ।। ऽ। ।। ऽऽ। ऽऽ ऽ। ।। ।। ऽ। ऽ = 16, 12 = 28 मात्राएँ
   नर नाग सुर गंधर्व कन्या, रूप मुनि मन मोहहीं।।

   इसी गणना के आधार पर छंद की पहचान की जाती है। यह 28 मात्रा वाला हरिगीतिका छंद है। इसी प्रकार आप भी मीरा के पदों में मात्राओं की गणना कीजिए और छंद का नाम शिक्षक से पता कीजिए।

योग्यता विस्तार –

1. छत्तीसगढ़ में भी कई महान संत हुए हैं। आप उनकी रचनाओं को संग्रहित कीजिए और मित्रों के साथ उन पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ में से अपनी पसंद के पदों की लय बनाकर संगीतमय प्रस्तुति कीजिए।
3. कबीरदास जी की साखियों को ढूँढ कर पढ़िए व आपस में चर्चा कीजिए।

पाठ – 7.2

मैं लेखक कैसे बना

अमृतलाल नागर

जीवन परिचय

अमृत लाल नागर का जन्म आगरा में 1917 में हुआ था। पारिवारिक पृष्ठभूमि से सम्पन्न अमृतलाल नागर का आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है, उनके कई उपन्यास जैसे नाच्यो बहुत गोपाल, सुहाग के नुपुर, अमृत और विष, बूँद और समुद्र, मानस का हंस को अनेक संस्थानों से पुरस्कृत किया गया। उन्होंने कहानी, नाटक, यात्रावृत्त, संस्मरण और अनेकानेक विधाओं में रचना की है। उन्होंने लखनऊ आकाशवाणी में लंबे समय तक काम किया और अनेक संस्थानों में प्रमुख पदों पर रहे। उनकी मृत्यु फरवरी 1990 में लखनऊ में हुई।

अपने बचपन और नौजवानी के दिनों का मानसिक वातावरण देखकर यह तो कह सकता हूँ कि अमुक–अमुक परिस्थितियों ने मुझे लेखक बना दिया, परंतु यह अब भी नहीं कह सकता कि मैं लेखक ही क्यों बना। मेरे बाबा जब कभी लाड़ में मुझे आशीर्वाद देते तो कहा करते थे कि ''मेरा अमृत जज बनेगा।'' कालांतर में उनकी यह इच्छा मेरी इच्छा भी बन गई। अपने बाबा के सपने के अनुसार ही मैं भी कहता कि विलायत जाऊँगा और जज बनूँगा।

हमारे घर में सरस्वती और गृहलक्ष्मी नामक दो मासिक पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती थीं। बाद में कलकत्ते से प्रकाशित होने वाला पाक्षिक या साप्ताहिक हिंदू–पंच भी आने लगा था। उत्तर भारतेंदु काल के सुप्रसिद्ध हास्य–व्यंग्य लेखक तथा संपादक पं. शिवनाथजी शर्मा मेरे घर के पास ही रहते थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र से मेरे पिता की घनिष्ठ मैत्री थी। उनके यहाँ से भी मेरे पिता जी पढ़ने के लिए अनेक पत्र–पत्रिकाएँ लाया करते थे। वे भी मैं पढ़ा करता था। हिंदी रंगमंच के उन्नानयक राष्ट्रीय कवि पं. माधव शुक्ल लखनऊ आने पर मेरे ही घर पर ठहरते थे। मुझे उनका बड़ा स्नेह प्राप्त हुआ। आचार्य श्याम सुंदर दास उन दिनों स्थानीय कालीचरण हाई स्कूल के हेडमास्टर थे। उनका एक चित्र मेरे मन में आज तक स्पष्ट है– सुबह–सुबह नीम की दातुन चबाते हुए मेरे घर पर आना। इलाहाबाद बैंक की कोठी (जिसमें हम रहते थे) के सामने ही कंपनी बाग था। उसमें टहलकर दातून करते हुए वे हमारे यहाँ आते, वहीं हाथ–मुँह धोते फिर चाँदी के वर्क में लिपटे हुए आँवले आते, दुग्धपान

होता, तब तक आचार्य प्रवर का चपरासी 'अधीन' उनकी कोठी से हुक्का, लेकर हमारे यहाँ आ पहुँचता। आध–पौन घंटे तक हुक्का गुड़गुड़ाकर वे चले जाते थे। उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि पं. बृजनारायण चकबस्त, के दर्शन भी मैंने अपने यहाँ ही तीन–चार बार पाए। पं. माधव शुक्ल की दबंग आवाज और उनका हाथ बढ़ा–बढ़ाकर कविता सुनाने का ढंग आज भी मेरे मन में उनकी एक दिव्य झाँकी प्रस्तुत कर देता है। जलियाँवाला बाग कांड के बाद शुक्लजी वहाँ की खून से रँगी हुई मिट्टी एक पुड़िया में ले आए थे। उसे दिखाकर उन्होंने जाने क्या–क्या बातें मुझसे कही थीं। वे बातें तो अब तनिक भी याद नहीं पर उनका प्रभाव अब तक मेरे मन में स्पष्ट रूप से अंकित है। उन्होंने जलियाँवाला बाग कांड की एक तिरंगी तस्वीर भी मुझे दी थी। बहुत दिनों तक वो चित्र मेरे पास रहा। एक बार कुछ अंग्रेज अफसर हमारे यहाँ दावत में आने वाले थे, तभी मेरे बाबा ने वह चित्र घर से हटवा दिया। मुझे बड़ा दुख हुआ था। मेरे पिता जी आदि पूज्य माधव जी के निर्देशन में अभिनय कला सीखते थे, वह चित्र भी मेरे मन में स्पष्ट है। हो सकता है कि बचपन में इन महापुरुषों के दर्शनों के पुण्य प्रताप से ही आगे चलकर मैं लेखक बन गया होऊँ। वैसे कलम के क्षेत्र में आने का एक स्पष्ट कारण भी दे सकता हूँ।

सन् 28 में इतिहास प्रसिद्ध साइमन कमीशन दौरा करता हुआ लखनऊ नगर में भी आया था। उसके विरोध में यहाँ एक बहुत बड़ा जुलूस निकला था। पं. जवाहर लाल नेहरू और पं. गोविंद बल्लभ पंत आदि उस जुलूस के अगुवा थे। लड़काई उमर के जोश में मैं भी उस जुलूस में शामिल हुआ था। जुलूस मील डेढ़ मील लंबा था। उसकी अगली पंक्ति पर जब पुलिस की लाठियाँ बरसीं तो भीड़ का रेला पीछे की ओर सरकने लगा। उधर पीछे से भीड़ का रेला आगे की ओर बढ़ रहा था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि दो चक्की के पाटों में पिसकर मेरा दम घुटने लगा था। मेरे पैर जमीन से उखड़ गए थे। दाएँ–बाएँ, आगे पीछे, चारों ओर की उन्मत्त भीड़ टक्करों पर टक्करें देती थी। उस दिन घर लौटने पर मानसिक उत्तेजना वश पहली तुकबंदी फूटी। अब उसकी एक ही पंक्ति याद है: 'कब लौं कहौं लाठी खाया करें, कब लौं कहौं जेल सहा करिए।'

वह कविता तीसरे दिन दैनिक आनंद में छप भी गई। छापे के अक्षरों में अपना नाम देखा तो नशा आ गया। बस मैं लेखक बन गया। मेरा खयाल है दो–तीन प्रारंभिक तुकबंदियों के बाद ही मेरा रुझान गद्य की ओर हो गया। कहानियाँ लिखने लगा। पं. रूपनारायण जी पांडेय 'कविरत्न' मेरे घर से थोड़ी दूर पर ही रहते थे। उनके यहाँ अपनी कहानियाँ लेकर पहुँचने लगा। वे मेरी कहानियों पर कलम चलाने के बजाय सुझाव दिया करते थे। उनके प्रारंभिक उपदेशों की एक बात अब तक गाँठ में बँधी है। छोटी कहानियों के संबंध में उन्होंने बतलाया था कि कहानी में एक ही भाव का समावेश करना चाहिए। उसमें अधिक रंग भरने की गुंजाइश नहीं होती।

सन 1929 में निराला जी से परिचय हुआ और तब से लेकर 1939 तक वह परिचय दिनों–दिन घनिष्ठ होता ही चला गया। निराला जी के व्यक्तित्व ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया। आरंभ में यदा–कदा दुलारेलालजी भार्गव के सुधा कार्यालय में भी जाया–आया करता था। मिश्रबंधु बड़े आदमी थे। तीनों भाई एक साथ लखनऊ में रहते थे। तीन–चार बार उनकी कोठी पर भी दर्शनार्थ गया था। अंदरवाले बैठक में एक तखत पर तीन मसनदें और लकड़ी के तीन कैशबाक्स रक्खे थे। मसनदों के सहारे बैठे उन तीन साहित्यिक महापुरुषों की छवि आज तक मेरे मानस पटल पर ज्यों की त्यों अंकित है। रावराजा पंडित श्यामबिहारी मिश्र का एक उपदेश भी उन दिनों मेरे मन में घर कर गया था। उन्होंने कहा था, साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए। चूँकि मैं खाते–पीते खुशहाल घर का लड़का था, इसलिए इस सिद्धांत ने मेरे मन पर बड़ी छाप छोड़ी। इस तरह सन 29–30 तक मेरे मन में यह बात एकदम स्पष्ट हो चुकी थी कि मैं लेखक ही बनूँगा।

काशी में उन दिनों अनेक महान साहित्यिक रहा करते थे। वहाँ भी जाना–आना शुरू हुआ। साल में दो चक्कर लगा आता था। शरतचंद्र चट्टोपाध्योय के दर्शन पाकर मैं स्फूर्ति से भर जाता था। शरत बाबू हिंदी मजे की बोल लेते थे। मुझसे कहने लगे, 'स्कूल कॉलेज में पढ़ते समय बहुत से लड़के कविताएँ–कहानियाँ लिखने लगते हैं, लेकिन बाद में उनका यह अभ्यास छूट जाता है। इससे कोई लाभ नहीं। पहले यह निश्चय करो कि तुम आजन्म लेखक ही बने रहोगे।' मैंने सोत्साह हामी भरी। शरत बाबू ने अपना एक पुराना किस्सा सुनाया। 18–19 वर्ष की आयु में उन्होंने लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी। क्रमशः उनकी दो–तीन किताबें छपीं और वो चमत्कारिक रूप से प्रसिद्ध हो गए... तब एक दिन रास्ते में शरत बाबू को अपने कॉलेज जीवन के एक अध्यापक मिल गए। उनका नाम बाबू पाँच कौड़ी (दत्त, डे या बनर्जी) था। वे बांग्ला साहित्य के प्रतिष्ठित आलोचक भी थे। अपने पुराने शिष्य को देखकर उन्होंने कहाः 'शरत, मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छे लेखक हो गए हो लेकिन तुमने अपनी किताबें पढ़ने को नहीं दी।' शरत बाबू संकुचित हो गए, विनयपूर्वक बोलेः 'वे पुस्तकें इस योग्य नहीं कि आप जैसे पंडित उन्हें पढ़ें।' पाँच कौड़ी बाबू बोलेः 'खैर, पुस्तकें तो मैं कहीं से लेकर पढ़ लूँगा, पर चूँकि अब तुम लेखक हो गए हो इसलिए मेरी तीन बातें ध्यान में रखना। एक तो जो लिखना सो अपने अनुभव से लिखना। दूसरे अपनी रचना को लिखने के बाद तुरंत ही किसी को दिखाने, सुनाने या सलाह लेने की आदत मत डालना। कहानी लिखकर तीन महीने तक अपनी दराज में डाल दो और फिर ठंडे मन से स्वयं ही उसमें सुधार करते रहो। इससे जब यथेष्ट संतोष मिल जाए, तभी अपनी रचना को दूसरों के सामने लाओ।' पाँच कौड़ी बाबू का तीसरा आदेश यह था कि अपनी कलम से किसी की निंदा मत करो।

अपने गुरु की ये तीन बातें मुझे देते हुए शरत बाबू ने चौथा उपदेश यह दिया कि यदि तुम्हारे पास चार पैसे हों तो तीन पैसे जमा करो और एक खर्च। यदि अधिक खर्चीले हो तो दो जमा करो और दो खर्च। यदि बेहद खर्चीले हो तो एक जमा करो और तीन खर्च। इसके बाद भी यदि तुम्हारा मन न माने तो चारों खर्च कर डालो, मगर फिर पाँचवाँ पैसा किसी से उधार मत माँगो। उधार की वृत्ति लेखक की आत्मा को हीन और मलीन कर देती है।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि इन चारों उपदेशों को मैं शतप्रतिशत अमल में ला सकता हूँ, फिर भी यह अवश्य कह सकता हूँ कि प्रायः नब्बे फीसदी मेरे आचरण पर इन उपदेशों का प्रभाव पड़ा है।

सन 30 से लेकर 33 तक का काल लेखक के रूप में मेरे लिए बड़े ही संघर्ष का था। कहानियाँ लिखता, गुरुजनों से पास भी करा लेता परंतु जहाँ कहीं उन्हें छपने भेजता, वे गुम हो जाती थीं। रचना भेजने के बाद मैं दौड़–दौड़कर, पत्र–पत्रिकाओं के स्टाल पर बड़ी आतुरता के साथ यह देखने को जाता था कि मेरी रचना छपी है या नहीं। हर बार निराशा ही हाथ लगती। मुझे बड़ा दुख होता था, उसकी प्रतिक्रिया में कुछ महीनों तक मेरे जी में ऐसी सनक समाई कि लिखता, सुधारता, सुनाता और फिर फाड़ डालता था। सन 1933 में पहली कहानी छपी। सन 1934 में माधुरी पत्रिका ने मुझे प्रोत्साहन दिया। फिर तो बराबर चीजें छपने लगीं। मैंने यह अनुभव किया है कि किसी नए लेखक की रचना का प्रकाशित न हो पाना बहुधा लेखक के ही दोष के कारण न होकर संपादकों की गैर–जिम्मेदारी के कारण भी होता है, इसलिए लेखक को हताश नहीं होना चाहिए।

सन 1935 से 37 तक मैंने अंग्रेजी के माध्यम से अनेक विदेशी कहानियों तथा गुस्ताव लाबेर के एक उपन्यास मादाम बोवेरी का हिंदी में अनुवाद भी किया। यह अनुवाद कार्य मैं छपाने की नियत से उतना नहीं करता था, जितना कि अपना हाथ साधने की नीयत से। अनुवाद करते हुए मुझे उपयुक्त हिन्दी शब्दों की खोज करनी पड़ती थी। इससे मेरा शब्द भंडार बढ़ा। वाक्य गठन भी पहले से अधिक निखरा।

दूसरों की रचनाएँ, विशेष रूप से कर्मठ लोकमान्य लेखकों की रचनाएँ पढ़ने से लेखक को अपनी शक्ति और कमजोरी का पता लगता है। यह हर हालत में बहुत ही अच्छी आदत है। इसने एक विचित्र तड़प भी मेरे मन में जगाई। बार–बार यह अनुभव होता था कि विदेशी साहित्य तो अंग्रेजी के माध्यम से बराबर हमारी दृष्टि में पड़ता रहता है, किंतु देशी साहित्य के संबंध में हम कुछ नहीं जान पाते। उन दिनों हिंदी वालों में बांग्ला पढ़ने का चलन तो किसी हद तक था, लेकिन अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य हमारी जानकारी में प्रायः नहीं के बराबर ही था। इसी तड़प में मैंने अपने देश की चार भाषाएँ सीखीं। आज तो दावे से कह सकता हूँ कि लेखक के रूप में आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए मेरी इस आदत ने मेरा बड़ा ही उपकार किया है। विभिन्न वातावरणों को देखना, घूमना, भटकना, बहुश्रुत और बहुपठित होना भी मेरे बड़े काम आता है। यह मेरा अनुभवजन्य मत है कि मैदान में लड़नेवाले सिपाही को चुस्त–दुरुस्त रखने के लिए जिस प्रकार नित्य की कवायद बहुत आवश्यक होती है, उसी प्रकार लेखक के लिए उपरोक्त अभ्यास भी नितांत आवश्यक है। केवल साहित्यिक वातावरण ही में रहनेवाला कथा लेखक मेरे विचार में घाटे में रहता है। उसे निस्संकोच विविध वातावरणों से अपना सीधा संपर्क स्थापित करना ही चाहिए।

(1962, टुकड़े–टुकड़े दास्तान में संकलित)

शब्दार्थ

घनिष्ठ – गहरी; **उन्नायक** – ऊपर उठाने वाले; **साइमन कमीशन** – अंग्रेजों के एक प्रतिनिधि मण्डल का नाम; **गुम** – खो जाना; **अमल में लाना** – व्यवहार में लाना; **सोत्साह** – उत्साह के साथ; **यथेष्ट** – जैसा जरूरी हो; **वृत्ति** – आदत।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक बनने के लिए शरत बाबू के क्या–क्या सुझाव थे?
2. अमृत लाल नागर ने अपने आत्मकथ्य में अपने युग के आंदोलनों का वर्णन किया है। उन आंदोलनों का लेखक पर क्या असर हुआ?
3. इस पाठ में लेखक ने अपने लेखक बनने के पीछे बहुत सारे कारणों को स्वीकार किया है। उन कारणों को लिखिए।
4. "साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए।'' ये कहने के पीछे क्या विचार हैं? लिखिए।
5. अंग्रेजों के दावत पर आने के पहले बाबा ने कौन सी तसवीर हटवा दी? उन्होंने उस तसवीर को क्यों हटवाया होगा ? अपने विचार लिखिए।

4C649G

पाठ से आगे

1. आप के मन में भी कुछ बनने के विचार आते होंगे। आप अलग–अलग समय पर क्या–क्या बनना चाहते रहे हैं? लिखिए। यह भी बताइए कि अभी आप क्या बनना चाहते हैं और क्यों?
2. लेखक ने बताया है कि उनके आस पास कई ऐसे लोग थे जिनसे वे प्रभावित हुए। आप के जीवन में भी कई लोग होंगे जिनसे आप प्रभावित होंगे। उनमें से किसी एक के बारे में संक्षेप में लिखिए।
3. किसी घटना का वर्णन कीजिए जिसका आप पर बहुत प्रभाव पड़ा हो।
4. पाठ के दूसरे अनुच्छेद में लेखक ने श्री श्यामसुंदर दास का एक चित्र अपने शब्दों से खींचा है। आप भी वैसे ही किसी व्यक्ति के बारे में लिखिए।

भाषा के बारे में

4CEZB4

1. पाठ में कई स्थानों पर अलग–अलग तरह के वाक्य प्रयुक्त हुए हैं। कुछ स्थानों पर क्रिया करने वाला यानी कर्ता महत्त्वपूर्ण है तो कहीं पर कर्म को ज्यादा महत्त्व दिया गया है।

जिस वाक्य में वाच्य बिन्दु 'कर्त्ता' है उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं। जैसे 'राम रोटी खाता है' तथा जिस वाक्य में वाच्य बिन्दु कर्त्ता न होकर कर्म हो वह कर्म वाच्य कहलाता है। जैसे – 'रोटी, राम के द्वारा खाई गई।'

आप पाठ में से खोजकर ऐसे वाक्यों को नीचे दी हुई तालिका के रूप में लिखिए–

क्र.सं.	कर्म वाच्य (काम को महत्त्व)	कर्तृ वाच्य (क्रिया करने वाले (कर्त्ता) को महत्त्व)
1.	इससे मेरा शब्द भंडार बढ़ा।	1. मैं लेखक बन गया।

2. अपने शिक्षक की सहायता से भाव वाच्य की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरणों का संकलन कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. साइमन कमीशन के बारे में पता कीजिए। वह क्या था, और लोग उसका विरोध क्यों कर रहे थे? लिखिए।

4CNVCR

2. अपने स्कूल के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक से मिल कर राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में बात कीजिए और उसमें भाग लेने वाले नेताओं के बारे में लिखिए।
3. पाठ में कई बड़े लेखकों के नाम आए हैं। उनकी एक सूची बनाइए और पुस्तकालय से उनकी रचनाओं के नाम खोज कर लिखिए।

पाठ – 7.3

जेबकतरा

ज्ञान प्रकाश विवेक

जीवन परिचय

ज्ञान प्रकाश विवेक वर्तमान में हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। आपने कहानी, कविता और हिन्दी ग़ज़लें लिखी हैं और लघुकथाएँ भी। आपका जन्म हरियाणा के बहादुरगढ़ जिले में 1948 में हुआ था। अपके कई कहानी संग्रह (अलग–अलग दिशाएँ, शहर गवाह है, उसकी ज़मीन, शिकारगाह और मुसाफिरखाना) एक कविता संग्रह (दीवार से झाँकती रौशनी) और ग़ज़ल संग्रह (धूप के हस्ताक्षर आँखों में आसमान) प्रकाशित हो चुके हैं। आपका एक उपन्यास 'दिल्ली दरवाज़ा' काफी मशहूर हुआ है। आपको हरियाणा साहित्य अकादमी ने तीन बार पुरस्कृत किया है।

लघु कथाएँ

बस से उतरकर जेब में हाथ डाला। मैं चौंक पड़ा। जेब कट चुकी थी। जेब में था भी क्या? कुल नौ रुपए और एक खत, जो मैंने माँ को लिखा था कि मेरी नौकरी छूट गई है। अभी पैसे नहीं भेज पाऊँगा...। तीन दिनों से वह पोस्ट कार्ड जेब में पड़ा था। पोस्ट करने को मन ही नहीं कर रहा था।

नौ रुपए जा चुके थे। यूँ नौ रुपए कोई बड़ी रकम नहीं थी, लेकिन जिसकी नौकरी छूट चुकी हो, उसके लिए नौ रुपये नौ सौ से कम नहीं होते।

कुछ दिन गुजरे माँ का खत मिला। पढ़ने से पूर्व मैं सहम गया। जरूर पैसे भेजने को लिखा होगा। लेकिन खत पढ़कर मैं हैरान रह गया। माँ ने लिखा था– "बेटा तेरा भेजा पचास रुपये का मनीऑर्डर मिल गया है। तू कितना अच्छा है रे... पैसे भेजने में कभी लापरवाही नहीं बरतता"

मैं इसी उधेड़बुन में लग गया कि आखिर माँ को मनी ऑर्डर किसने भेजा होगा?

कुछ दिन बाद एक और पत्र मिला। चंद लाइने थीं आड़ी तिरछी। बड़ी मुश्किल से खत पढ़ पाया।

लिखा था "भाई नौ रुपये तुम्हारे और इकतालीस रुपये अपनी अपनी ओर से मिला कर मैंने तुम्हारी माँ को मनी ऑर्डर भेज दिया है। फिकर मत करना... माँ तो सबकी एक जैसी होती है। वह क्यों भूखी रहे?"... तुम्हारा 'जेबकतरा।'

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक की माँ को जेबकतरे ने पैसे क्यों भेजे?
2. ''जिसकी नौकरी छूट चुकी हो, उसके लिए नौ रूपये नौ सौ से कम नहीं होते।'' लेखक ने ऐसा क्यो कहा है?
3. जेबकतरा कहानी पढ़ने के बाद मन में कौन से भाव जागृत होते हैं? लिखिए।

पाठ से आगे

1. आपके हिसाब से कौन–कौन से काम गलत हैं?
2. अगर आपके पैसे खो जाएँ तो आपको कैसा महसूस होगा?
3. बेरोजगारी के कारण क्या–क्या हैं?
4. लेखक ने अपने साथ घटी एक घटना को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। आप भी अपने साथ घटी किसी घटना को इसी प्रकार प्रस्तुत करें।

भाषा के बारे में

उधेड़बुन– मन की एक स्थिति जिसमें तर्क वितर्क चल रहा होता है। आप ऐसे दो अवसरों के बारे में सोच कर लिखिए जब आपके मन में उधेड़बुन चली हो।

पाठ – 7.4

गोधूलि

हेक्टर ह्यूग मुनरो 'साकी' (1870–1916)

जीवन परिचय

साकी का जन्म 18 जनवरी, 1870 में बर्मा में हुआ। स्कॉटिश परिवार के हेक्टर साकी प्रारंभ में पत्रकार थे। वे कई वर्षों तक विदेश संवाददाता के रूप में काम करते रहे। 1908 से वे लंदन में बस गए। उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज पर तीखा व्यंग्य निहित है। उनकी रचनाएँ अपने प्लॉट और झटकेदार अंत के लिए जानी जाती हैं। साकी का निधन 1916 में फ्रांस में हुआ।

नार्मन गॉर्टस्बी पार्क में एक बेंच पर बैठा हुआ था। उसके दाहिनी ओर शोर–शराबे से भरा हाइड पार्क स्थित था। मार्च का महीना, गोधूलि की बेला थी। सड़क पर अधिक लोग नहीं थे, फिर भी कई लोग विभिन्न मनःस्थितियों में इधर से उधर, एक बेंच से दूसरी तक घूमते नजर आ रहे थे।

गॉर्टस्बी को यह दृश्य पसंद आया, उसकी मौजूदा मनःस्थिति से वह मेल खाता था। गोधूलि, उसके अनुसार पराजय की घड़ी थी, जब पराजित तथा निराश स्त्री–पुरुष अपने को लोगों की नजरों से छिपा कर यहाँ आ बैठते थे। ऐसी घड़ी में उनके हाव–भाव, वेश–भूषा में कोई कृत्रिमता नहीं होती थी। उलटे वे उनकी ओर से उदासीन रहते थे, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उस मनःस्थिति में लोग उन्हें पहचान पाएँ। वहाँ बैठा–बैठा गॉर्टस्बी भी अपने को पराजित लोगों में मानने लगा। उसे धनाभाव नहीं था और यदि वह चाहता, तो अपने को समृद्धिशाली वर्ग में गिनवा सकता था। उसे तो पराजय का अनुभव हुआ था, अपनी किसी महत्वाकांक्षा को लेकर।

बेंच पर उसके बगल में ही एक वृद्ध बैठा था। उसके कपड़े–लत्ते विशेष अच्छे नहीं थे। फिर वह उठा और थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गया। अब उसकी जगह आकर बैठा एक युवक, जिसकी वेश–भूषा तो अच्छी थी, किन्तु जिसके चेहरे पर पहले वाले वृद्ध व्यक्ति की तरह ही खिन्नता तथा रुष्टता झलक रही थी।

– आप बहुत अच्छे मूड में नहीं लगते! गॉर्टस्बी ने उससे कहा। युवक ने बिना झिझक उसकी ओर ऐसे देखा कि वह संभल गया।

– आपका मूड भी अच्छा हरगिज नहीं होता, अगर आप मेरी तरह असहाय बन गए होते। मैंने अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी मूर्खता कर डाली है।

– ऐसा? गॉर्टस्बी ने उदासीनता से कहा।

– इस दोपहर में वर्कशायर स्क्वायर के पैंटागोनियन होटल में ठहरने के ख्याल से आया था। वहाँ पहुँचा, तो क्या देखता हूँ कि उसकी जगह पर एक थियेटर खड़ा है। टैक्सी ड्राइवर ने कुछ दूर पर एक दूसरे होटल की सिफारिश की। वहाँ पहुँच कर मैने घर पर होटल का पता देते हुए एक पत्र लिखा और साबुन की एक टिकिया खरीदने के विचार से निकला। साबुन साथ लाना मैं भूल गया था और होटल का साबुन इस्तेमाल में लाना मुझे पसंद नहीं। साबुन खरीद कर जब होटल लौटने को हुआ, तो सहसा खयाल आया कि न तो मुझे होटल का नाम याद है और न ही उस सड़क का, जिस पर वह स्थित है। मैं एक शिलिंग लेकर बाहर निकला था और साबुन की टिकिया खरीदने के बाद एक ही पेंस मेरे पास रह गया है। अब मैं रात को कहाँ जा सकता हूँ।

यह कहानी सुनाई जाने के बाद निस्तब्धता छाई रही।

– शायद आप सोच रहे हैं कि मैंने एक अनहोनी बात आपसे कह सुनाई है! युवक ने कुछ झुँझलाहट भरे स्वर में कहा।

– बिलकुल असंभव तो नही! गॉर्टस्बी ने दार्शनिक ढंग से कहा'– मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले एक विदेशी राजधानी में मैंने भी ऐसा ही किया था।

अब युवक उत्साहित होकर बोला– विदेशी नगर में यह परेशानी नहीं। यहाँ अपने ही देश में ऐसा हो जाने पर बात बिल्कुल भिन्न हो जाती है। जब तक कोई ऐसा भद्र व्यक्ति नहीं मिल जाता, जो मेरी आपबीती को सत्य

समझ कर मुझे कुछ रकम कर्ज के तौर पर दे, तब तक मुझे रात खुले आकाश में गुजारनी पड़ेगी। मुझे खुशी है कि आप मेरी आपबीती को सफेद झूठ नहीं मान रहे हैं।

– बात तो ठीक है, किन्तु आपकी कहानी का सबसे कमजोर मुद्दा यह है कि आप वह साबुन की टिकिया नहीं पेश कर सकते।

युवक जल्दी से आगे को सरक कर बैठ गया, जल्दी–जल्दी उसने जेबें टटोलीं और फुसफसाया–मैंने उसे खो दिया लगता है।

– होटल और साबुन की टिकिया, दोनों को एक ही अपराह्न में खो देना तो लापरवाही का ही सूचक माना जाएगा। किन्तु वह युवक उसकी अंतिम बात सुनने के लिए रुका नहीं।

बेचारा! गॉर्टस्बी ने सोचा, सारी कहानी में अपने लिए साबुन की टिकिया लेने जाना ही सच्चाई को प्रकट करने वाली एकमात्र बात थी और उसी ने बेचारे को दुखी कर दिया।

इन विचारों के साथ वहाँ से जाने के लिए गॉर्टस्बी उठा ही था कि ठिठक कर रह गया। क्या देखता है कि बेंच के बगल में नए रैपर में लिपटी हुई कोई वस्तु जमीन पर पड़ी है। वह वस्तु साबुन की टिकिया है, उसने सोचा। युवक की खोज में वह तेजी से लपका। अभी वह कुछ ही दूर चल पाया होगा कि उसने उस युवक को एक स्थान पर विमूढ़ावस्था में खड़ा पाया।

– आपकी कहानी का महत्वपूर्ण गवाह मिल गया है। गॉर्टस्बी ने रेपर में लिपटी टिकिया उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा– आप मुझे मेरे अविश्वास के लिए क्षमा करें। यदि एक गिनी से आपका काम चल सके, तो.....

युवक ने उसके द्वारा बढ़ाई गई गिनी को जेब में रखते हुए उसके संदेह को तत्काल दूर कर दिया।

'यह लीजिए मेरा कार्ड, पते के साथ'। इस सप्ताह में किसी भी दिन मेरा कर्ज आप लौटा सकते हैं। हाँ यह टिकिया भी लीजिए।

'भाग्यवश ही यह आपको मिल पाई!' कहने के साथ ही युवक नाइट ब्रिज की दिशा में तेजी से लुप्त हो गया।

'बेचारा!' गॉर्टस्बी ने सोचा।

अभी वापस लौटकर वह अपनी बेंच पर, जहाँ उपरोक्त नाटक घटित हुआ था, बैठने ही वाला था कि उसने एक वृद्ध को बेंच के चारों ओर झुककर कुछ तलाश करते पाया। उसने यह जान लिया कि वह वही वृद्ध था, जो कुछ देर पहले उस बेंच का सहभागी था।

क्या आपका कुछ खो गया है? उसने सहानुभूतिपूर्वक पूछा।

हाँ, साबुन की एक टिकिया।

अभ्यास

पाठ से

1. युवक की बात पर गार्टस्बी को विश्वास क्यों नहीं हुआ?
2. गॉर्टस्बी को कैसे विश्वास हुआ कि युवक सच बोल रहा है?
3. कहानी सुनाए जाने के बाद निस्तब्धता क्यों छा गई?
4. साबुन की टिकिया वास्तव में किसकी थी? और क्यों?
5. कहानी में से वे बिन्दु छाँट कर लिखिए जहाँ पर परिस्थिति बदलती है।

पाठ से आगे

1. गॉर्टस्बी को एक दृश्य पसंद आया। उसका वर्णन कहानी में मिलता है। आपको भी कई बार कुछ दृश्य पसंद आए होंगे। उनमें से किसी एक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. कहानी के घटनाक्रम में स्थिति कई बार बदलती है। ऐसा जीवन में भी होता है। आप भी ऐसा कोई उदाहरण लिखिए।

4Q4HZH